ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(9): 348-350
www.allresearchjournal.com
Received: 21-07-2020
Accepted: 24-08-2020

डॉ. उपमा सिन्हा
जयलक्ष्मीपुरम मैसूरु-12, कर्नाटक, भारत

Corresponding Author:
डॉ. उपमा सिन्हा
जयलक्ष्मीपुरम मैसूरु-12, कर्नाटक, भारत

बदलते परिवेश में युवा वर्ग के लिए 'सत्य एवं अहिंसा का महत्व'

डॉ. उपमा सिन्हा

वर्तमान समय में भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व हिंसा और प्रतिहिंसा से ग्रसित है। धर्म, प्रान्त, जाति, भाषा इत्यादि के नाम पर मनुष्यों का रक्त बहाया जा रहा है। खास कर युवा को, जो देश के भविष्य है वे अपनी बातों को मनवाने के लिए 'आतंकवाद' का सहारा ले रहे है। प्रतिदिन हम अखबारों में पढ़ते है आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर में इतने लोगों को मार डाला। चन्दन तस्कर वीरप्पन ने कन्नड़ अभिनेता राजकुमार को अगुवा कर लिया वगैरह। इस तरह के अनगिनत खबरें हमें आए दिन पढ़ने को मिलते हैं। ऐसे समय में गाँधीजी के 'सत्य और अहिंसा' का सिद्धान्त आज के संदर्भ में भी युवा वर्ग के लिए नव जागरण का कार्य प्रस्तुत कर सकता है।

महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के हथियार द्वारा भारत को अंग्रेजों के दमन चक्र से मुक्ति दिलायी थी। उनका मानना था कि शुभ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शुभ साधन का होना आवश्यक है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'My Experiments with truth' में लिखा है कि "सत्य की तलाश में ही उन्हें 'अहिंसा' का विचार प्राप्त हुआ, जिसका उन्होंने जीवनोपर्यन्त पालन किया। उनका मानना है कि अहिंसा नामक शुभ साधन द्वारा ही हम सत्यरूपी साहस को प्राप्त कर सकते हैं।

गाँधीजी के मानस पर वैष्णव ईश्वरवाद की प्रबल छाप थी परन्तु साथ ही वे कुरानशरीफ, बाइबिल इत्यादि से ही काफी प्रभावित थे। फलतः गाँधीजी के जीवन पर इन धार्मिक ग्रंथों की भी छाप थी। गाँधीजी ने 'सत्य' को ही ईश्वर माना और उन्होंने अपने इस विचार की जबरदस्त वकालत भी की है। उनके अनुसार ईश्वर के अनेकों नाम की वजह से उन्हें 'अनाम' कहा जाता है, उनके असंख्य रूप हो सकते है अतः ईश्वर को 'सत्य' कहना औचित्यपूर्ण है। पुनः अपनी तर्क की पुष्टि में कहते हैं 'सत्य' की उत्पत्ति 'सत्त' से हुई है जिसका अर्थ है "है" जिसका 'निबंध न हो सके' इस तरह ईश्वर 'सत्य' के साथ एकरूप करने से 'ईश्वर है' तथा 'ईश्वर का निषेध' नहीं हो सकता दोनों ही बातें सिद्ध होती है।

गाँधीजी का कहना है कि 'ईश्वर' शब्द से विभिन्नता सिद्ध होती है जैसे ईश्वर एक है, अनेक है, वह ईश्वरवादी हो सकता है, अनीश्वरवादी हो सकता है, परन्तु 'सत्य' को ईश्वर मानने से ऐसी विभिन्नताएँ सूचित नहीं होती। ईश्वर पर बौद्धिक रूप से संशय किया जा सकता है किन्तु 'सत्य का निषेध आत्म-व्याघातक है। सत्य पूर्णतया व्यापक एवं सार्वभौम है। निरीश्वरवादी तथा ईश्वरवादी सभी 'सत्य' की सत्ता में विश्वास करते है। 'सत्य' स्वतः प्रकाश है। 'ईश्वर का धार्मिक आस्था का चरम विषय मानने पर मतभेद उत्पन्न होता है, क्योंकि व्यक्ति, जाति, देश', वर्ण के लोग अलग-अलग ईश्वर की पूजा करते हैं परन्तु 'सत्य' को 'ईश्वर' कहने से इस प्रकार का धार्मिक मतभेद समाप्त हो जाता है। सम्पूर्ण विश्व में प्रत्येक वर्ग और जाति के लोग 'सत्य में आस्था' रखते है जो 'सार्वभौम धर्म' का वास्तविक आधार बन सकता है। सत्य के अन्तर्गत ही सभी धर्मों को भी यहाँ तक कि निरीश्वरवादी और मार्क्सवादी को भी एकसूत्र में बांधा जा सकता है' जो सभी प्रकार के विवादों से परे है, साथ ही सत्य को ईश्वर मानने के कारण गाँधी कहते है कि कोई भी सही अर्थ में निरीश्वरवादी है ही नहीं।

गाँधीजी सत्य की खोज में अहिंसा के विचार को प्राप्त किया है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है –'हिंसा नहीं करना।' उन्होंने हिंसा का विश्लेषण करते हुए कहते हैं—हिंसा का अर्थ 'हत्या', 'किसी को किसी प्रकार की पीड़ा देना' या किसी को क्षति या हानि पहुँचना—ये सब आते है परन्तु ये सभी अपने-आप हिंसा न होकर, हिंसा होने के पीछे की मानसिकता ही है। किसी का 'प्राण लेना', पीड़ा पहुँचाना या क्रोध से, किसी स्वार्थ से, ईर्ष्या से जानबूझकर किया गया है तो वह हिंसा है, परन्तु इन सबका मन, वचन और कर्म से पूर्ण त्याग ही अहिंसा है। जैन धर्म में अहिंसा पर काफी बल दिया गया है, जिसका पालन मन, वचन तथा कर्म तीनों स्तर पर होना चाहिए। इन तीनों स्तरों में अन्य से हिंसा करना तथा हिंसा होने देना—ये सब भी हिंसा ही है। गाँधीजी जैन धर्म के अनुसार अहिंसा का सामान्य जीवन में सामान्य मनुष्यों से पालन व्यवहारिक नहीं मानते हैं—न ही संभव। उनका मानना है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में हिंसा भी अहिंसा है, जैसे—किसी बच्चे को 'रैबी' हो जाए तथा उपचार के सभी विकल्प समाप्त हो जाए तो उस बच्चे को भयानक कष्ट से मुक्ति दिलाने के लिए भाग्य के सहारे छोड़ना ठीक नहीं हैं, क्योंकि यह एक प्रकार का हिंसा है बल्कि ऐसी परिस्थिति में उसका प्राणान्त करना ही हमारा कर्त्तव्य यानि अहिंसा है। इस प्रकार कुछ विशेष परिस्थितियों में प्राण लेना गाँधीजी अनुशासित मानते है क्योंकि इसमें प्रेम और दया की भावना निहित है, जो हिंसा का सूचक न होकर अहिंसा का सूचक है। 'हिंसा नहीं करना' अहिंसा का निषेधात्मक पक्ष है जबकि अहिंसा का भावात्मक पक्ष – 'प्रेम' निषेधात्मक पक्ष से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रेम एक आन्तरिक एकता की भावना है, जिसमें अपने प्रिय से ऐक्य या तादात्म्य स्थापित होता है। यह तभी संभव है जब हम विचलित करने वाली मानसिक वृत्तियों से अपने को पृथक रखे। गाँधीजी के अनुसार प्रेम वह शक्ति है जो मन को पूर्णतया स्वच्छ कर व्यक्ति को श्रेष्ठतर बनाती है। उन्होंने प्रेम के अन्तर्गत दया, क्षमा, करुणा, सहानुभूति, परकल्याण, बर्दाश्त करने की शक्ति आदि जैसे उच्चतर भावनाओं को समाविष्ट किया है। गाँधीजी कहते है प्रेम के लिए अत्यधिक शक्ति की आवश्यकता होती क्योंकि इसमें कहा जाता है कि अपने विरोधियों से भी प्रेम करो।

गाँधीजी कहते है कि अहिंसा कायरों का नहीं बल्कि सशक्तों का हथियार है, क्योंकि इसका पालन वही कर सकता है जिसने भय का जीत लिया हो। हिंसा आसान है, परन्तु पर कल्याण के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग करना, सशक्तों का कार्य है, निर्बलों का नहीं। अतः जो सचमुच सबल है, वे भौतिक बल प्रहार से विजय नहीं पाते, बल्कि निर्भयता तथा प्रेम से विजय पाते है। यह अकर्मण्यता या निष्क्रियता की मनोवृत्ति न होकर कर्म की प्रेरणा देता है, क्योंकि इसका पालन हर क्षण वस्तुतः इसका पालन सतत् संकल्प, चिन्तन तथा कर्मों के द्वारा करता है जिसमें असीम धैर्य की आवश्यकता होती है, जो निष्क्रियता नहीं है।

गाँधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा का पालन व्यवहारता 'सत्याग्रह' द्वारा संभव है। सत्याग्रह का अर्थ है—'सत्य का आग्रह', 'सत्य की शक्ति'। अर्थात् सत्य का दामन हर स्थिति में थामे रहना ही सत्याग्रह है। जिसमें व्यक्ति अपने विरोधी को प्रेम, अहिंसा, आत्मबलिदान की क्रियाओं द्वारा अशुभ प्रवृत्तियों को पूर्णतया निष्क्रिय कर 'हृदय परिवर्तन' कर देता है, जो विवश करने की विधि नहीं है क्योंकि विवश करने में भले ही शारीरिक हिंसा का प्रयोग न हो, लेकिन मानसिक स्तर पर इसमें आवेश तथा बल प्रयोग होता है जो हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ है। जबकि सत्याग्रह पर आधारित कार्य ईश्वरीय से, सत्य से प्रेरित होता है, जिससे इसका क्षेत्र बड़ा व्यापक तथा पूर्णतया सार्वभौम है। सत्याग्रह के मार्ग पर अग्रसर व्यक्ति को अडिग, ईमानदार, अनुशासित, पूर्णतया निर्भय, विनीत मनोवृत्ति, उसके विचार तथा कार्य में समरूपता तथा सहिष्णुता होना चाहिए। जब एक सत्याग्रही इन सभी बातों पर अमल करेगा तभी वह सही मायने में सत्य और अहिंसा का पालन अपने जीवन में कर सकता है और तभी एक सत्याग्रही अकेला ही सत्य के बल के द्वारा बड़ी से बड़ी शक्तियों को झुका सकता है।

गाँधीजी के सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही व्यक्ति धर्म, जाति, प्रान्त इत्यादि से ऊपर उठकर जाति इत्यादि के नाम होनेवाली हिंसा को रोक सकता है। धर्म जीने की पद्धति है और प्रत्येक व्यक्ति अपने जीने की पद्धति को चुनने में स्वतंत्र हैं, बशर्ते अन्य ने जो अपने जीने का ढंग चुना है, उन विभिन्न ढंगों के प्रति भी वह सहिष्णुता तथा आदर भाव रखे। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण रखता हैं और सत्य, अहिंसा का अनुशीलन आत्म नियंत्रण और आत्मशुद्धता के द्वारा करता है क्योंकि धर्म का अर्थ ही है—सत्य का आग्रह अर्थात् सत्याग्रह। एक सत्याग्रही अपने-अपने रूप से ऊपर उठकर अन्य के शुभ लिए स्वार्थरहित कर्म करता है। परन्तु आज का युवावर्ग धर्म का वास्तविक स्वरूप को न जानकर धार्मिक संप्रदाय या धार्मिक संस्थाओं को महत्व देते है जो धर्म के वास्तविक स्वरूप को विकृत कर रहे है और मानव-मानव के बीच हिंसा तथा नफरत का विष फैला रहे है, क्योंकि ये धार्मिक संप्रदाय अपने धर्म को विशिष्ट महत्व देते है जबकि प्रत्येक धर्म अपने धर्मावलंबी को एक श्रेष्ठतर मानव बनाने की क्षमता रखता है। गाँधीजी हिन्दू धर्म को विशिष्ट महत्व देते है, परन्तु वे सभी विचार जो सत्य तथा अहिंसा के परम आदर्शों से तनिक भी असंगत है, गाँधीजी को मान्य नहीं है। यह सत्य है कि आज के युवावर्ग अनेक प्रकार की समस्याओं से संत्रस्त है जैसे—बेरोजगारी, कॉलेज और स्कूल के शिक्षकों की हड़ताल, भविष्य की चिंता वगैरह-वगैरह। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हिंसा का मार्ग अपनाये। उन्हें चाहिए अपने समस्याओं का समाधान 'सत्याग्रह' के राह पर चलककर करें। शुद्ध साधन के अभाव में शुद्ध साध्य भी अशुद्ध हो जाता है। गाँधीजी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर 'सत्याग्रह' द्वारा 'स्वराज' के

स्वप्न को साकार किया था। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि युवा वर्ग को गाँधीजी के बताये सत्य-अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपने उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को साकार करने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. बसन्त कुमार लाल – समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, संस्करण-1991
2. Gandhi MK. – Satyagrahi, Non-Violent Resistance. Navajwan Publishing House, Ahmedabad, Edition-1951
3. Gandhi K. – An Autobiography or the story of my Experiment with Truth, Navajawan Publishing House, Ahmedabad, Edition, 1948.
4. Gandhi MK. – Harijan
5. Gandhi MK.– Young India
6. Bose NK. – Studies in Gandhism, Second Edition, Indian Association Publishing Co, Calcutta, Edition, 1947.
7. Datta DM. – The Philosophy of Mahatma Gandhi, University of Calcutta, Edition-1968
8. Kripalani JB. – The Gandhian Way, Bera and Co., Bombay, Edition, 1945.